Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

कोरोना काल में संगीत के विभिन्न स्वरूप

DR. SUDHA SHARMA

Assistant Professor, Dept. of Indtrumental Music, Saroop Rani Government College, Amritsar

भूमिका

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य को प्रत्येक काल में जब भी किसी आपदा का सामना करना पड़ा है तो उसने हर परिस्थिति में अपनी मनोस्थिति को बलपूर्वक संभालने का यथासंभव प्रयास किया है और निश्चित ही उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण उसके व्यक्तित्व एवं कला में निखार भी आया है। आधुनिक युग में तकनीकी उपकरणों का बाखूबी प्रयोग हो रहा है। जिसका प्रभाव कला संस्कृति के क्षेत्र पर भी दिखाई देता है। संगीत कला का कोई भी पक्ष इस आधुनिकता से पीछे नहीं रहा। कोरोना काल में जहाँ एक ओर संगीत ने कोरोना से प्रभावित लोगों का संगीत चिकित्सा के रूप में उपचार किया तो वहीं संगीत व्यवसाय एवं शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन के विभिन्न स्वरूपों को स्वीकारते हुए विकास के पद पर अग्रसर होते हुए दिखाई दिया। वर्तमान काल में भारतीय संगीत शिक्षण पद्धति एक विस्तृत एवं समृद्ध परंपरा के साथ-साथ नवीन युग की ओर बढ़ रही है। विभिन्न संचार माध्यमों ने संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधा है। देश की विभिन्न कलाओं को विकसित करने में यह उपकरण अत्यन्त ही लोकप्रिय एवं लाभदायक सिद्ध हुए हैं।

इंटरनेट ने आज शिक्षा को आसान बना दिया है अनेकों मददगार ऐप्स के माध्यम से शिक्षा को आसान ही नहीं बल्कि दिलचस्प भी बना दिया है। यह आधुनिक उपकरण समय और ऊर्जा की बचत के साथ-साथ नवीन ज्ञान प्राप्त करने में भी मददगार सिद्ध होते हैं। प्रकृति के नियमों को समय-समय पर परिवर्तन सहित स्वीकारते हुए मानव अपने जीवन को और सुखद एवं आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास आरंभ से ही करता आया है और यथासंभव इसमें सफल भी हुआ है।

संगीत कला को भारतीय अन्य सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। भारतीय संगीत कई परिस्थितियों से गुजरता हुआ एक सूक्ष्म एवं वैभवशाली कला के रूप में विकसित हुआ है। भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। सिद्ध महापुरुषों के लिए आध्यात्मिक अनुभूति एवं भगवान को प्राप्त करने का मार्ग होने के साथ-साथ यह सामान्य व्यक्ति के लिए एक सुखद मनोरंजन का साधन माना जाता है।

संगीत कला भारतीय संस्कृति की आत्मा है। वर्तमान समय की व्यस्त तनावयुक्त एवं प्रतियोगी सामाजिक परिस्थितियों में संगीत ही एक ऐसी कला है जो मानव के आहत मन एवं आत्मा को क्षण भर के लिए ही सही शान्ति एवं सुख प्रदान करती है।"[1] संसार में घटने वाली सामाजिक] धार्मिक] राजनैतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव मानव के मनोभावों एवं विचारों पर भी पड़ता है और आवश्यकताओं के अनुसार कलाओं में भी यथासंभव परिवर्तन होते रहते हैं। संगीत चाहे भारतीय हो अथवा पाश्चात्य] वह अपने विकास के लिए साधन या सामग्री जन जीवन से ही जुटाता रहा है।[2] कोरोना काल का संगीत कला की विभिन्न परिस्थितियां दृष्टिगोचर होती है। उसका विवरण निम्नलिखित है।

तनाव मुक्ति के साधन के रूप में

भारत में कला मात्र एक मनोरंजन का साधन ही नहीं अपितु यह तो प्रत्येक प्राणी की मनोस्थिति को परिवर्तित करने का सशक्त माध्यम है। एक अच्छे संगीत का संबंध हमेशा मन और आत्मा से होता है जो लोगों के मन को शांति एवं सुकून प्रदान करता है। संगीत का आज चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। अनेक बड़ी से बड़ी बिमारियों का उपचार आज संगीत के माध्यम से

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

किया जा सकता है। पिछले कुछ दशकों से शोधकर्ताओं ने वैज्ञानिक रूप से इस बात को मान्यता देने की कोशिश की है कि म्यूजिक थैरेपी रोगियों के लिए बहुत ही कारगर है। पुराने दर्द, यादाश्त कमजोर होना अनिद्रा] और यहां तक कि हाल ही में मस्तिष्क की बिमारियों जैसी समस्याओं के उपचार के साधन के रूप में भी संगीत का उपयोग होने लगा है।

संगीत सुनने से हमारे दिमाग में ऐंड्रोफिन हार्मोन का स्त्राव होता है जिससे उत्साह की भावना जागती है। ब्रिटिश एकेडमी ऑफ साउंड थैरेपी वर्षो से चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए संगीत सुनने के लाभकारी प्रभावों का अध्ययन कर रही है। उन्होंने पाया है कि महज 13 मिनट संगीत सुनना तनाव दूर कर सकता है।"[3]

टी डब्लयू एच की ओर से आयोजित एक ऑनलाईन सेमिनार में हिस्सा लेते हुए जानी मानी गायिका और उस्ताद बिस्मिला खां की दत्तक पुत्री सोमा घोष फिल्मकार, शुभेन्दु घोष, वायलिन वादक पं. सुखदेव प्रसाद मिश्र मानवाधिकार डॉ॰ लेनिन रघुवंशी और जाने माने भौतिकशास्त्री और संगीतज्ञ रामकृष्ण जी ने जोर देकर कहा कि शास्त्रीय संगीत और संगीत की तमाम शैलियों के महत्व को समझते हुए किसी भी मरीज़ के भीतर साकारात्मक सोच विकसित की जा सकती है और उसके भीतर जीवन के प्रति उत्साह जगाया जा सकता है। मरीज़ों को उनके पसंद का संगीत सुनाना चाहिए ताकि उनके भीतर का निराशावाद खत्म हो और वो जल्द ठीक हो सकें।"[4]

इस प्रकार कोरोना काल के दौरान भी कई मरीज़ों में अपना पसंदीदा संगीत सुनकर खुद को इस मुश्किल परिस्थिति से बाहर निकाला। कोरोना काल में संगीत के माध्यम से रोगियों को स्वस्थ होते देखा गया और यह सिद्ध हुआ कि संगीत कैसे रोगियों की मानसिक स्थितियों में साकारात्मक एवं आश्चर्यजनक परिवर्तन कर उनकी मनोस्थितियों को बदला।

शिक्षण के क्षेत्र में

संगीत कला क्योंकि एक प्रदर्शन कला है इसलिए इसके शिक्षण के लिए गुरू शिष्य परम्परा आरम्भ से ही प्रचलित रही है। एक योग्य गुरू अपने शिष्य को केवल संगीत के तकनीकी गुण ही नहीं सिखाता अपितु शिक्षण के साथ-साथ उसमें सांगीतिक संस्कार भी प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप शिष्य में सृजन एवं कल्पना शक्ति जागृत होती है और वह इस कला में निपुण हो जाता है। हर काल में संगीत ने समाज को प्रभावित किया है तथा समाज से संगीत प्रभावित रहा है। काल प्रवाह में जैसे समाज-जीवन में स्थिरत्यंतर आये वैसे संगीत के स्वरूप में संगीत शिक्षा की पद्धतियों में संगीत प्रस्तुत करने की रीतियों में कई परिवर्तन आये हैं।"[5]

जैसे जैसे मानव संस्कार परिर्माजित हुए सभ्यता एवं संस्कृति में परिवर्तन हुए और समाज में भी बदलाव आया, वैसे-वैसे ही शास्त्रीय संगीत का भी उत्तरांतर विकास होता गया। सामाजिक] सांस्कृतिक] राजनीतिक स्वतंत्रता के कारण मानव जीवन में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप समाज में मानवीय भावों का नवीनीकरण हुआ] जिसके फलस्वरूप शास्त्रीय संगीत भी अछूता न रह सका।"[6]

कोरोना काल में लॉकडाउन के समय परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण जब सामूहिक एकत्रता पर प्रतिबंध था तो शिक्षकों के पास शिक्षा देने के लिए ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को विकल्प के रूप में चुनने के अतिरिक्त कोई और रास्ता नहीं था। फलस्वरूप संगीत संस्थानों विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों आदि के संगीत शिक्षण का कार्य भी ऑनलाइन के माध्यम से शुरू हो गया। हालांकि डिजिटल रूप से शिक्षण कार्य बहुत पहले से ही प्रचार में था परन्तु वह कुछेक वर्ग तक ही सीमित था। सामान्य परिवार के लोगों एवं विद्यार्थियों के लिए यह इतना आसान नहीं था।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

पूर्ण रूप से व्यवहारिक रूप से प्रचलन में न होने के कारण इस कार्य में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कुछेक स्थानों पर ऑनलाईन कक्षा के लिए उपयोग होने वाले उपकरण जैसे कि स्मार्टफोन, इंटरनेट, वाई-फाई आदि की उपलब्धि ही नहीं थी एवं कुछेक वर्ग को ऑनलाईन शिक्षण तकनीक का पूर्ण रूप से ज्ञान ही नहीं था। फलस्वरूप कोरोना काल में शिक्षण कार्य में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। परन्तु धीरे-धीरे परिस्थितियों को समझ कर और इन आधुनिक तकनीकों को अपनाकर शिक्षकों और विद्यार्थियों ने इसमें सफलता प्राप्त की। शिक्षण पद्धति में यह एक सराहनीय कदम था।

कोरोना काल में इसे हमारी शिक्षण पद्धति की एक बहुत बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है कि किसी भी परिस्थिति में fo|kलयों में शिक्षण कार्य को रोका नहीं गया और ना ही शिक्षण के स्तर को गिरने नहीं दिया बल्कि बहुत सारे fo|kलयों एवं विश्व fo|kलयों द्वारा इस कठिन समय में आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए गुगल मीट] जूम ऐप के माध्यम से या फेसबुक और यू-टयूब चैनल के माध्यम से संगीत से संबंधित अनेक विषयों पर आधारित कई वैबिनार] ई. कार्यशालाएँ एवं ई. प्रतियोगिताओं का आयोजन संगीत के श्रोताओं एवं विद्यार्थियों के लिए समय-समय पर किया गया और इसका लाभ सभी वर्ग के शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उठाया।

व्यवसाय के रूप में

कलाएं समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब होती हैं। प्रत्येक काल में संस्कृति को सहेज कर रखने और उसे समयानुसार विकसित रूप प्रदान करने हेतु इन्हीं विभिन्न कलाओं का महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ योगदान है। मानव अपनी क्षमता एवं प्रतिभा के अनुकूल इन कलाओं के माध्यम से अपना जीवन यापन करता आया है। अपने सामाजिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु वह अपनी कला एवं प्रतिभा को पहचानते हुए उसे अपने व्यवसाय के रूप में स्वीकार करता है। इस स्तर तक पहुँचने में उस व्यक्ति विशेष के अथक प्रयास और कड़ी मेहनत होती है तब जाकर वह अपनी प्रतिभा में पूर्णता हासिल करता है और एक सफल कलाकार की उपाधि प्राप्त करता है। अतः कहा जा सकता है कि उसकी प्रतिभा एवं कला उस व्यक्ति विशेष के संपूर्ण जीवन की जमा पूँजी होती है।

कोरोना काल में जब लगभग सभी व्यवसाय पूर्ण रूप से ऑनलाईन माध्यम पर ही निर्भर हो रहे थे तो वहाँ संगीत भी इस पक्ष से कहाँ अछूता रह सकता था। इस काल में सभी व्यसकों की तरह संगीत कलाकारों के लिए भी बहुत कठिन समय था। लॉकडाउन होने की वजह से कोई भी कलाकार कहीं भी अपनी कला प्रदर्शन करने के लिए किसी दूसरी जगह जा नहीं सकता था। इस कठिन समय को कुछ समय के लिए सहन करते हुए फिर कलाकारों ने भी संगीत कला का प्रस्तुतिकरण डिजिटल रूप से करना प्रारम्भ कर दिया। बहुत से कार्यक्रम अब ऑनलाईन माध्यम से होने लगे थे।

एक कलाकार समाज में श्रोताओं में अपनी कला के द्वारा पहचाना जाता है और श्रोताओं के मध्य इस पहचान को वह किसी भी कीमत में खोना नहीं चाहता। इसी बात को ध्यान में रखते हुए कुछेक कलाकारों ने नामात्र शुल्क लेकर और कुछेक कलाकार बिना किसी शुल्क के ही अपनी कला का प्रस्तुतिकरण करते रहे। संपूर्ण भारत डिजिटल की राह पर तो बहुत पहले ही अग्रसर हो चुका था परन्तु कोरोना काल में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह युवा हो] बच्चा हो या बजुर्ग] हर कोई इस डिजिटल माध्यम की राह पर चलने के लिए एक तरह से विवश ही था और फिर विवश होता क्यों न। संपूर्ण भारत की सामाजिक] आर्थिक एवं शिक्षण व्यवस्था इस ऑनलाईन माध्यम पर ही तो पूर्णता निर्भर थी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

उपसंहार

डिजिटल तकनीकों ने 21वीं सदी के लगभग प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। इंटरनेट जैसी महाशक्ति से आज अपने देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी कला संस्कृति के प्रचार प्रसार के साधनों में वृद्धि हुई है। इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत व्यक्तिगत एवं संस्थागत दोनों तरह के लगभग पूर्ण रूप से डिजिटल रूप धारण कर रही है और भारतीय शास्त्रीय संगीत के कलाकार और श्रोता भी इसे अपनी इच्छा से अपना रहे हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इसे अपनाना मानव की प्रवृत्ति परन्तु पूर्णता तकनीक को ही आधार बना लेना कितना उचित है यह सोचने की आवश्यकता है। सरकार की तरफ से भी डिजिटल व्यवस्था को पूर्व नियोजन के रूप में लाकर लागू करना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति इसका लाभ उठा सके और भविष्य में किसी भी चुनौतियों का सामना न करना पड़े।

संदर्भिका

अशोक यमन, संगीत रत्नावली, पृष्ठ-1, अभिषेक पब्लिकेशन्स चण्डीगढ़, प्र.सं. 2008-
livehindustan.com, 10 May 2020.
शर्मा, अमिता, शास्त्रीय संगीत का विकास] पृष्ठ 17, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, प्र.सं. 2000-
amarujala.com, 1 June 2021.
शर्मा, सत्यवती, संगीत का समाज शास्त्र, भूमिका पृष्ठ 1, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1995-
शर्मा, अमिता, शास्त्रीय संगीत का विकास, पृष्ठ 6, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, प्र.सं. 2000-